स्नातक हिंदी प्रतिष्ठा खंड - III

आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

डॉ॰ सलीमा नाहिद परवी॰
प्राध्यापक हिंदी विभाग
एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद

हिंदी साहित्य का आदिकाल अंतर्विरोधों के साहित्य का काल है। इस समय समाज की स्थिति अच्छी नहीं थी। यह समय संघर्षों से भरा हुआ था। एक तरफ युद्ध की स्थितियाँ थी तो दूसरी ओर प्रेम एवं श्रृंगार का भी प्रभाव कम नहीं था। इसी समय नाथ एवं जैन सम्प्रदाय के धार्मिक उपदेशात्मक एवं भावना तथा जीवन का प्रभाव पड़ रहा था। इन्हीं कारणों से इस काल को अंतर्विरोधों का काल कहा जाता है। इसी के अनुरूप साहित्य में भी एकाधिक प्रवृत्तियाँ दिखलाई पड़ती हैं। ऐसे में यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि किस प्रवृत्ति को प्रधान माना जाए। आदिकाल के अतिरिक्त किसी और काल में यह संभव नहीं दिखलाई पड़ता। आदिकाल पर समग्र विचारोपरान्त हम निम्नांकित बिन्दुओं पर केंद्रित हो सकते हैं।

(१) युद्धों का सजीव वर्णन :- इस काल के काव्यों में युद्धों का बड़ा ही सजीव वर्णन प्राप्त होता है। चूंकि यह काल संघर्षों का था अतः छोटी-छोटी बातों या किसी बात के भी संघर्ष होते रहते थे। सामंत राजाओं के दरबार में कवि आश्रित होते थे। उनका एक मात्र काम राजा की विरुदावली का गान ही था। ये कवि केवल कलम के ही सिपाही नहीं होते थे वरन् ये तलवार चलाने में भी माहिर होते थे। युद्ध तथा अभियान में ये राजा के साथ [illegible] जाते थे एवं युद्ध में सक्रिय रूप से भाग भी लेते थे। चूंकि युद्ध के अनुभवों को ये स्वयं अनुभव करते थे अतः उनका वर्णन जो ये करते थे वो बड़ा सजीव हो उठता था। यही कारण है कि इस काल के आख्यान युद्धों के सजीव वर्णन से भरे हैं। इस काल के काव्य की यह प्रमुख प्रवृत्ति थी।

पृथ्वीराजरासो, आल्हाखंड प्रभृति ग्रंथों में युद्ध के वर्णन आज भी पाठकों को रोमांच एवं उत्साह से भर देते हैं। इस दृष्टि से इस काल की तुलना में हिंदी साहित्य का कोई भी काल नहीं ठहर पाता।

(11) प्रेम एवं शृंगार का हृदयहारी वर्णन :-

इस काल में युद्ध एवं संघर्ष आम थे किन्तु युद्ध का कारण प्रायः राज्य की सीमा की वृद्धि या नारीरत्न की प्राप्ति हुआ करते थे। दरबारी कवि जब दरबार में राजा के सम्मुख किसी सुंदर एवं रूपवती नारी का वर्णन करता था तब उसे प्राप्त करने के लिए राजा के मन में एक लालच पैदा हो जाती थी। यह वर्णन इतना आह्लादकारी होता था कि राजा के चित्त में उसकी प्राप्ति की चाह पैदा हो जाती थी और वह संबंधित राज्य पर आक्रमण कर उस सुंदरी को जीत कर जबरदस्ती प्राप्त करता था। अन्य शब्दों में तो आदिकालीन युद्धों का एक प्रधान कारण नारी हुआ करती थी। ऐसे में प्रश्न उठता है कि इस काल को वीरता का क्यों कहा जाए, क्योंकि वीररस के मूल में शृंगार की ही प्रधानता हुआ करती थी। इसलिए जब कुछ लोग इसे वीरगाथा काल कहते हैं तो यह प्रश्न भी उठता है कि वीरता क्यों? किसलिए? उत्तर है नारी के लिए - तो क्या इसे शृंगार गाथा काल कहें या कुछ और कहें। पृथ्वीराजरासो में अनेक स्त्रियों को जीतने का वर्णन उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त रचनाओं बीसलदेव रासो या विद्यापति पदावली में शृंगार का हृदयहारी वर्णन उपलब्ध है। षड्ऋतु वर्णन, बारहमासा इत्यादि का अत्यंत मनोहारी वर्णन इस काल के साहित्य में उपलब्ध है। निष्कर्ष रूप से आदिकाल की यह प्रवृत्ति प्रायः समस्त रचनाओं में दृष्टिगत होती है। यही नहीं इसका प्रभाव आगामी साहित्य पर भी पड़ता दिखलाई पड़ता है। भक्तिकाल या रीतिकाल - का साहित्य शृंगार के इस काल से गहरी छाप देखी जा सकती है।